ड:खमूर्टिईत: st. ड:खमेव च an einer Stelle. c. वा यतो मूलम् an der einen, वापि यन्मूल-स् an der anderen Stelle. d. एकाङ्गमपि तत्त्यज्ञेत् an einer Stelle.

2409. = MBn. 1,5143. b. स्रुतम् st. कुलम्. c. तयोर्चिवारहः सख्यं च. Vgl. Spr. 1266. 2423. Kin. II, Çl. 22:

. स्वायायवाताप्रतास्त्रीया । विस्ते विद्यास्त्रीया । स्वायाया विद्या । । विस्ते विद्यास्त्रीय विद्या । । विस्ते विद्यास्त्रीय विद्या ।

In welchem Lande man nicht geehrt wird, wo kein Lebensunterhalt, keine Verwandte und auch keine einzige Wissenschaft zu finden ist, da soll man nicht wohnen. Sch.

2426. Vgl. Spruch 3198.

2428. Vgl. Spruch 2998. Вöнть. — Nag. Niті Çl. 17:

मानः देना प्यान्य वित् स्त्रेन् स्त्रेन् । । ते त्या हुना हुन् स्त्रेन प्यान्य देन । । प्रेन्तिन स्त्रुन प्रके स्वान्य देन । । प्रेन्तिन स्त्रुन स्त्रेन स्त्रिन स्त्

Welchem Gemüthe man zu schaden wünscht, dem muss man beständig angenehme Worte sagen, gleich wie der Jäger zu der Zeit, wenn er sieht, dass das Wild zu erlegen ist, angenehme Weisen lieblich singt. Sch.

2429. Vgl. Spruch 3150.

2436. Pragn. Cl. 87:

Wer selbst keine Einsicht besitzt, was soll der mit der Wissenschaft machen? Was soll derjenige, der beider Augen beraubt ist, mit dem Spiegel machen?

2437. Vgl. МВн. 5, 4537.

2439. a. प्राभवेत् stört das Metrum. Stenzler.

2440. Nag. Nîti Çl. 85:

यान प्राञ्ची स्पिन ने क्षियम प्रमा वित्ती सेन क्षियम छै से सेन छै। वित्ती सेन के क्षियम छै से सेन छै। वित्ती सेन के क्षियम के क्षियम छै। वित्ती सेन के क्षियम छै। वित्ती सेन क्षियम सेन के क्ष्यम सेन के क्षियम सेन के के क्षियम सेन के क्षियम सेन के क्षियम सेन के क्षियम सेन